**ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA**
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 **PP. No.- 334-336**

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- I, Issues-27, YEAR- Jan.-March-2023

# राष्ट्रीय स्वाधीनता आन्दोलन एवं महिलायें : आजादी के अमृत महोत्सव के सन्दर्भ में

**डॉ0 स्वास्ती कुमारी**

इतिहास, बक्सर (बिहार), भारत

**Received-20.03.2023, Revised-26.03.2023, Accepted-30.03.2023 E-mail: swetabxrbxr@gmail.com**

***सारांशः*** ***भारत जन को समर्पित 'आजादी का अमृत महोत्सव' केन्द्र सरकार द्वारा देश की स्वाधीनता के 75 वर्ष पूर्ण होने के अवसर पर मनाया जा रहा है। यह वर्तमान पीढ़ी को अपनी संस्कृति, इतिहास और गौरवशाली परम्परा से जोड़ने का अप्रतिम प्रयास है। प्रस्तुत शोध प्रपत्र में स्वंतत्रता आंदोलन में महिलाओं की भूमिका का विश्लेषण करने का प्रयास किया गया है। परम्परागत रूप से भारतीय महिलायें समाज के हाशियें पर ही हैं लेकिन आधुनिक भारत के निर्माण में स्वाधीनता आंदोलन में सक्रिय एंव सकारात्मक भूमिका का निर्वाह कर महिलाओं ने जो अपनी सामाजिक सहभागिता सुनिश्चित की वह आज तक अनगत जारी है। इस शोध पत्र में ऐतिहासिक एंव विवरणात्मक शोध प्रारूप का प्रयोग किया गया है। ऐतिहासिक सामग्री के विवेचन से इस शोध में यह पाया गया कि महिलाओं की स्वतंत्रता आंदोलन में भूमिका पर पर्याप्त आंकड़े उपलब्ध नहीं है विशेष तौर पर आम जन–समुदायों से सबंधित महिलाओं से संबंधित आंकड़े तथापि उनकी सहभागिता अत्यंत महत्वपूर्ण और सकारात्मक रही है।***

***कुंजीभूत शब्द– राष्ट्रीय स्वाधीनता आन्दोलन, आजादी के अमृत महोत्सव, गौरवशाली परम्परा, स्वंतत्रता आंदोलन, भूमिका।***

वर्तमान केन्द्र सरकार द्वारा देश की स्वाधीनता की 75 वीं वर्षगांठ पर, 75 सप्ताह पूर्व आणदी का अमृत महोत्सव मनाने का लक्ष्य रखा गया है। इस महोत्सव का प्रारम्भ वर्ष 2020 में नमक सत्याग्रह के 91 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में प्रधानमंत्री मोदी ने साबरमती आश्रम से पदयात्रा को स्वीकृति प्रदान करके किया। इस पदयात्रा को 'फ्रीडम मार्च' का नाम दिया गया। उल्लेखनीय है कि 12 मार्च 1930 को महात्मा गाँधी ने नमक सत्याग्रह का प्रारम्भ किया था। इसे दाण्डी मार्च के तौर पर भी जाना जाता है। 1930 में ब्रिटिश शासन में भारतीयों को नमक बनाने का अधिकार नहीं था उन्हें इंग्लैंड से आयातित नमक ही प्रयुक्त करना पड़ता था। अंग्रेजों ने नमक पर कई गुना कर भी लगा दिया था इस कर को हटाने हेतु गाँधी जी ने सत्याग्रह चलाया था। नमक भारत की आत्मनिर्भरता का प्रतीक था। अंग्रेजों द्वारा नमक पर कर भारत के मूल्यों एंव आत्मनिर्भरता पर प्रहार था। गाँधी जी द्वारा चलाया गया नमक सत्याग्रह जन–जन का आन्दोलन बन गया। आजादी के अमृत महोत्सव का प्रारम्भ इसीलिए इस दिन से किया गया क्योंकि न केवल आत्मनिर्भर भारत का स्वप्न पूरा हो सके बल्कि भारत के विकास से विश्व के विकास को भी प्रोत्साहन मिल सके। इस महोत्सव को मनाने हेतु श्रृंखलाबद्ध सांस्कृतिक कार्यक्रमों का प्रारम्भ किया गया है। 'चरखे के रास्ते वोकल फॉर लोकल' इस योजना का प्रमुख अभियान है। आजादी का अमृत महोत्सव प्रधानमंत्री मोदी के शब्दों में आजादी की ऊर्जा का अमृत, नए विचारों का अमृत, नवीन संकल्पों का अमृत, आत्मनिर्भरता का अमृत तथा स्वाधीनता सेनानियों से प्रेरणाओं का अमृत है। आजादी का अमृत महोत्सव समकालीन युवा पीढ़ी को न केवल स्वाधीनता की महत्ता एंव मूल्य पर मंथन करने हेतु प्रेरित करता है वरन् राष्ट्रीय जन आन्दोलन की बहु–आयामी व्याख्या के लिए भी प्रेरणा प्रदान करता है। पाश्चात्य शिक्षा प्राप्त अभिजन वर्ग द्वारा प्रारम्भ किया गया आन्दोलन उत्तरोत्तर आम जन का आन्दोलन बन गया। महिलायें, किसान, जनजातियाँ तथा अल्पसंख्यक इस आंदोलन का अभिन्न हिस्सा थे। प्रस्तुत शोध प्रपत्र आणदी के अमृत महोत्सव के प्रकाश में राष्ट्रीय जन आंदोलन में महिलाओं की भूमिका एंव सहभागिता का समाजशास्त्रीय मूल्याँकन करता है।

पद्धति– प्रस्तुत शोध ऐतिहासिक दस्तावेजों, पुस्तकों एंव अन्य लिखित सामग्री पर आधारित है अतः ऐतिहासिक विधि का प्रयोग किया गया है। संकलित सामग्री का सैद्धान्तिक एंव तुलनात्मक आधार पर आलोचनात्मक विश्लेषण करते हुए सामान्यीकरण का प्रयास किया गया है। पी0 वी0 यंग का मानना है कि ''ऐतिहासिक पद्धति आगमन के सिद्धांतो के आधार पर अतीत की उन सामाजिक शक्तियों की खोज है जिन्होंने वर्तमान को एक विशेष रूप प्रदान किया है (सांइटिफिक सोशल सर्वे एण्ड रिसर्च, पृ0–145)। बॉटोमोर ने स्पष्ट किया है कि ऐतिहासिक दृष्टिकोण सामाजिक संस्थाओं, समाजों और सभ्यताओं की उत्पत्ति, विकास और रूपांतरण

संबंधी समस्याओं पर ध्यान केन्द्रित करता है। इसमें मानव इतिहास के समूचे विस्तार और समाज की सभी महत्वपूर्ण संस्थाओं पर विचार किया जाता है (समाजशास्त्र समस्याओं और साहित्य का अध्ययन, पृ0–49)।

इस शोध पत्र में ऐतिहासिक पद्धति के साथ–साथ विवरणात्मक शोध प्रारूप (Discriptive Research Design) का प्रयोग भी किया गया है। वर्णनात्मक शोध का प्रमुख उद्देश्य किसी घटना, स्थिति या परिवेश का विस्तृत वर्णन करना होता है। कापालान (1964) ने लिखा है ''वैज्ञानिक क्रिया की वास्तविक शुरूआत घटनाओं के वर्णन से होती है। इसके बाद ही

**अनुरूपी लेखक / संयुक्त लेखक**

उनका समूहीकरण, वर्गीकरण और विश्लेषण किया जाता है। "यदि किसी शोधार्थी को किन्हीं व्यक्तियों या समुदाय के अध्ययन में रूचि है तब वह उनसे सम्बन्धित तथ्यों जैसे आयु, लिंग, जाति धर्म, नस्ल, शिक्षा, व्यवसाय और आय जैसे तथ्यों को संकलित करके उनका वर्णन कर सकता है। समाजशास्त्र के क्षेत्र में यदि पिछले पचास वर्षों में हुए शोध अध्ययनों का लेखा–जोखा तैयार किया जाये, तब स्पष्ट रूप में यह तथ्य उजागर होता है कि इसमें भी अधिकांश शोध अध्ययनों की प्रवृत्ति मुख्यतः वर्णनात्मक रही है। अभी भी समाज– शास्त्रीय शोध वर्णनात्मक घेरे से बाहर नहीं आ पाये हैं (रावत, हरिकृष्ण, 2021, पृ0सं0–139–140)।

विश्लेषण– 'महिलाओं के आन्दोलनों पर विचार करते हुए घनश्याम शाह ने स्वतंत्रता आंदोलन में स्त्रियों की भूमिका का विश्लेषण भी सविस्तार किया है। उनके अनुसार स्वतंत्रता आंदोलन में स्त्रियों की भूमिका की समीक्षा कमला देवी चटोपाध्याय (1958), अपर्णा बसु (1976,1984), मनमोहन कौर (1980), रजनी अलेक्जेंडर (1984), उमा राव और मीरा देवी (1984) इत्यादि ने की है। कतिपय समाज वैज्ञानिकों के निष्कर्ष हैं कि स्वतंत्रता आंदोलन ने 'स्त्री मुक्ति' के आंदोलन में सहायता की है ; क्योंकि नारीवाद और राष्ट्रवाद परस्पर जुड़े हुए हैं। स्त्रियों की गृहिणी की सामाजिक भूमिका के साथ बिना छेड़ – छाड़ किये सार्वजनिक जीवन में भाग लेने हेतु स्त्रियों को प्रोत्साहित किये जाने की गाँधी की विचारधारा और स्त्रियों की लामबन्दी करने के उनके प्रयास भी स्वाधीनता आंदोलन में स्त्रियों को भाग लेने के लिए उत्तरदायी हैं। सुभाष चन्द्र बोस ने भी 'महिला राष्ट्रीय संघ' नामक स्त्रियों के संगठन का निर्माण किया था, जिसने स्वाधीनता आन्दोलन में सक्रिय भूमिका अदा की है (मेहता,1982)। वृहद स्तर पर स्वतंत्रता संग्राम में स्त्रियों की सहभागिता के विश्लेषण के अतिरिक्त विभिन्न समाज वैज्ञानिकों द्वारा गुजरात, कर्नाटक और उत्तर प्रदेश के लघु स्तरीय अध्ययनों में प्रादेशिक विभिन्नता से युक्त अध्ययन भी किये गये हैं। अपर्णा बसु (1976) के अनुसार 'स्वतंत्रता संग्राम में स्त्रियों को 'राजनीतिक साथियों के रूप में स्वीकार किया गया है और उन्हें सहभागिता के समान अवसर दिये गये हैं। यह निष्कर्ष छुटपुट उदाहरणों पर आधारित है।

गोविन्द केलकर (1984) का मानना है कि महिलाओं की स्वतंत्रता आंदोलन में लामबंदी की गई, क्योंकि वे अहिंसात्मक संघर्ष के लिए उपयुक्त मानी गई, उनकी भूमिका 'सहायताकर्ताओं' की थी। रजनी अलेक्जेंडर का मानना था कि स्वंतत्रता आंदोलन में स्त्रियों की सहभागिता कई रूपों में प्रकर हुई है और यह सर्वदा राजनीतिक विरोध के रूप में संगठित एंव प्रेरित नहीं थीं, उदाहरणार्थ महाराष्ट्र और गुजरात में 'प्रभात फेरी' को देशभक्ति की भावना को जागृत करने का साधन बनाया गया। सम्पूर्ण भारत में अगणित स्त्रियों ने फरार और भूमिगत क्रान्तिकारियों को भोजन एंव शरण दी, वे राजनीतिक बंदियों, उनके सम्बन्धियों और अनजान लोगों के संपर्क में रही और कई प्रकार से सहायता प्रदान की। स्वतंत्रता आंदोलन में बहुतेरी स्त्रियों की सहभागिता – समुदाय और घर दोनों में थी, (शाह, घनश्याम, 2009, पृ0सं0 142–143)।

**राष्ट्रीय स्वाधीनता आन्दोलन में महिलाओं की भूमिका और सक्रियता मोटे तौर पर दो स्तरों पर दृष्टिगत होती है :**

– प्रथम, वे महिलायें जो राजनीति में रूचि भी रखती थी और सक्रिय भी थीं।

– द्वितीय वे महिलायें जिन्होंने अपने लेखन द्वारा सक्रियता प्रदर्शित की।

नारी शक्ति का आभास गाँधी जी को भी था; उनका कथन था कि 'मुझे विश्वास है कि महिलायें स्वाधीनता आंदोलन में भाग लेंगी। मुझे चिंता नहीं कि मेरे सारे सिपाही बंदी बना लिये जायें। हमारा कार्य तो इतना सरल है कि इसे तो महिलायें भी सरलता से चला सकेंगी। झांसी की रानी लक्ष्मीबाई महान् महिला क्रान्तिकारी थीं। एनी बेसेन्ट एंव भगिनी निवेदिता ने अपना सर्वस्व समाज सेवा एंव देश के उत्थान में लगा दिया वे राजनीति में भी सक्रिय रहीं। आबदी बानो बेगम (बाई अमन), स्वर्ण कुमारी देवी, सरला देवी चौधरी, सरोजनी नायडू, विजय लक्ष्मी पंडित, सुचेता कृपलानी, अरूणा आसफ अली, पुत्तु लक्ष्मी इत्यादि महिलायें राष्ट्रीय चेतना, सामाजिक चेतना एंव नारी चेतना की अग्रणी थीं (वी0एन0 सिंह एंव जनमेजय सिंह, 2005, पृ0सं0 233–255) किसान और आदिवासी महिलाओं ने विविध आन्दोलनों में पूरी ताकत से भागीदारी की।

1850 के दशक में मूल विद्रोह में महिलाओं ने सक्रिय रूप से भाग लिया। उन्हें गिरफ्तार किया गया और फाँसी दी गई क्योंकि विद्रोही दलों में महिलायें प्रायः शामिल होती थीं। इन दलों में पुरूष आग लगाने, लूटने का कार्य करते थे व महिलायें सामान (अनाज) आदि ढोकर लाती थीं। संथाल महिलाओं ने बड़ी संख्या में विद्रोही दलों की आँख और कान का काम किया। महिलायें सूचना देने के साथ–साथ खाने–पीने का सामान भी उपलब्ध कराती थीं। 1899–1900 के उलगुलान में भी आदिवासी महिलाओं ने उग्र रूप से हिस्सा लिया। उन्होंने हथियारों का प्रयोग करके भू–स्वामियों की सम्पत्ति, पुलिस स्टेशनों आदि पर हमला किया। बिरसा मुण्डा ने इस पर बल दिया कि आदिवासी पुरूषों को बहु–विवाह, मद्यपान आदि को छोड़कर महिलाओं का शोषण समाप्त करना चाहिए। मोप्पला विद्रोह में भी महिलायें सक्रिय, आक्रामक और आंदोलन को उत्तेजित करने में सहायक रही हैं।

राष्ट्रीय आंदोलन के इस दौर में यद्यपि महिलाओं ने लोकप्रिय आंदोलनों में भाग लिया, पर उनका स्वरूप प्रधानतः

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- I, Issues-27, YEAR- Jan.-March-2023

'परदे के पीछे' या 'घर के अंदर' का रहा। उन्होंने उल्लेखनीय समर्थन और सहभागिता का परिचय दिया और ऐसा आधार उपलब्ध कराया जिसके बगैर आंदोलन का विकास असंभव था। पूँजीवाद, सामंतवाद और पितृसत्तात्मक ढाँचें के बाद भी महिलाओं के योगदान की उपेक्षा नहीं की जा सकती (शुक्ल, आर0एल0, 1998, पृ0सं0 279–280)।

20वीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में महिलाओं के कई राष्ट्रीय संगठन स्थापित हुए 1917 में वीमेन्स इंडिया एसोसिएश्न, 1926 में नेशनल काउंसिल ऑफ इंडियन वीमेन और 1927 में ऑल इंडिया वीमेन कॉन्फ्रेंस आदि। ये स्वायत्त महिला संगठन महिलाओं को सांगठनिक गतिविधियों की ओर आकर्षित करने में सफल हुए पर ये संगठन मध्यवर्गीय महिलाओं के थे जिनका बहुसंख्यक भारतीय महिलाओं पर प्रभाव सीमित था। विभिन्न अध्ययनों में सहस्त्रों महिलायें सामने आईं जिन्होंने आणदी की लड़ाई में सहकारी भूमिका निभाई। यद्यपि स्वाधीनता आंदोलन में महिलाओं की भागीदारी बड़े पैमाने पर रही। समाज के लिंग आधारित श्रेणीगत ढाँचें पर भी सवाल नहीं उठे न ही महिलाओं के विशिष्ट मुद्दें उठाए गये। महिलाओं को सक्रिय करने हेतु अनेक रूपकों का प्रयोग किया गया। 'विस्तारित परिवार' की अवधारणा ने परिवार के दायरे को विकृत बना दिया कि उसमें समूचा देश या समग्र समुदाय समा जाये। इस प्रकार महिलाओं की सार्वजनिक प्रतिबद्धता को उनकी पोषणकारी भूमिका के वैध विस्तार के रूप में देखा गया। महिलाओं ने गाँधीवादी आन्दोलनों में व्यापक भागीदारी की। नर आंदोलन के अहिंसक तौर तरीके ने महिलाओं की पारंपरिक छवि का अतिक्रमण नहीं किया। गाँधी जी ने राष्ट्रवादी राजनीति और महिला की परम्परागत छवि के बीच अन्तः संबंध बनाया। राष्ट्रवादी आंदोलन की भाषा, रूपक और मुहावरे परम्परा और धर्म के साथ गुँथे–जुड़ें रहे (शुक्ल, आर0एल0,1998, पृ0सं0 289–290)।

प्रसिद्ध समाजशास्त्री ए0आर0 देसाई ने अपनी पुस्तक 'भारतीय राष्ट्रवाद की सामाजिक पृष्ठभूमि' में राजनीति और वर्ग संघर्ष में महिलाओं की भागीदारी का मूल्यांकन किया है। उनका मानना है कि समकालीन भारतीय इतिहास की सर्वाधिक शानदार घटना 1919 के पश्चात् राजनीति में भारतीय महिलाओं का तीव्रता से प्रवेश करना था। अंग्रेजों के आगमन से पूर्व भारत में रण्यिा बेगम, चाँद बीबी, नूरजहाँ, अहिल्या बाई होल्कर जैसी कुलीन परिवारों की कुछ महिलायें ही राजनीति में सक्रिय हुई थीं और आम महिलायें राजनीति से दूर थीं। ब्रिटिशकाल में इस स्थिति में परिवर्तन हुआ उन्होंने सीमित मिले मताधिकार का प्रयोग किया, आंदोलनों में भागीदारी की। यह भारत के इतिहास में अनूठी स्थिति थी। हजारों महिलायें राजनीतिक जन आंदोलनों में सहभागी थीं, शराब की दुकानों में धरना दे रही थीं, प्रदर्शनों में भाग ले रहीं थीं। एक ही झटके में महिलाओं ने अपनी युगों पुरानी पाबंदियों को समाप्त कर दिया था अब वे नागरिकों के स्तर पर आ गई थीं, राजनीतिक कार्यक्रमों में मत देने लगीं और बड़ें राजनीतिक आंदोलनों में हिस्सा लेने लगी थीं। सरोजनी नायडू, कमलादेवी चट्टोपाध्याय तथा विजय लक्ष्मी पंडित जैसी महिलायें अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त थीं। 1936 में जब कांग्रेस सरकारों का गठन हुआ अनेक भारतीय महिलाओं ने मंत्रियों, प्रांतीय विधायिका में उप सचिवों और उपाध्यक्षों के रूप में कार्य किया। भारतीय महिलायें स्थानीय बोर्डो और नगरपालिकाओं की सदस्य बनीं। भारतीय महिलायें खूब जागरूक हुईं। यद्यपि भयंकर निर्धनता के कारण उच्च और मध्यमवर्गीय महिलायें ही शिक्षा के अवसरों का लाभ उठा पाईं और उन्हीं की राजनीतिक भागीदारी भी रही। निरक्षरता और गरीबी के बाद भी महिलाओं में अपने अधिकारों के प्रति चेतना तेजी से बढ़ी। भारतीय महिलाओं की जागरूकता उनके मध्य राष्ट्रीय और व्यक्तिगत स्वतंत्रता की राष्ट्रीय भावना और लोकतांत्रिक चाह का नतीजा थी (देसाई, ए0आर0, 2018, पृ0 सं0–177–78)।

**निष्कर्ष**– साराँशतः यह कहा जा सकता है कि भारत की अधिकाँश महिलाओं के पास न तो स्वतंत्रता थी और न ही आत्म–अभिव्यक्ति के विकास का अवसर, लेकिन जो महिलायें समाज के विशेषाधिकार प्राप्त तबकों से थीं, अधीनता की स्थिति से स्वतंत्र थीं, पाश्चात्य शिक्षा प्राप्त थीं उन्होंने राष्ट्रीय स्वाधीनता आंदोलन में उत्साहपूर्वक भागीदारी की।

## संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. देसाई, ए0आर0 (अनु0 कमल नयन चौबे), 2018 भारतीय राष्ट्रवाद की सामाजिक पृष्ठभूमि, सेज पब्लिकेशंस, नई दिल्ली।
2. आर0एल0 शुक्ल (सं0) 1998, आधुनिक भारत का इतिहास (स्वतंत्रता प्राप्ति और देश– विभाजन तक), हिन्दी माध्यम कार्यान्वयन निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली।
3. रावत, हरिकृष्ण, 2021, सामाजिक शोध की विधियाँ, रावत पब्लिकेशंस, जयपुर।
4. शाह, घनश्याम (अनु0 हरिकृष्ण रावत), 2009, भारत में सामाजिक आन्दोलन (संबधित साहित्य की एक समीक्षा), रावत पब्लिकेशंस, जयपुर।
5. सिंह, वी0एन0 एंव सिंह जनमेजय,2005, भारत में सामाजिक आंदोलन, रावत पब्लिकेशंस, जयपुर।
6. यंग, पी0वी0, 1973, साइंटिफिक सोशल सर्वे एण्ड रिसर्च नई दिल्ली, प्रेंटिस–हॉल।
7. बॉटोमोर, टी0बी0 (अनु0 गोपाल प्रधान), 2004, समाजशास्त्र समस्याओं और साहित्य का अध्ययन, ग्रन्थ शिल्पी दिल्ली।

*****